येव्गेनी
चारुशिन



प्राणिजगत की पहली सैर







येव्गेनी चारुशिन

प्राणिजगत की पहली सैर

अनुवादक: योगेन्द्र नागपाल • चित्रकार: निकीता चारुशिन

रादुगा प्रकाशन • मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर 302001





गरम और ठंडे देशों के जानवर







शेर

हिरनो, जान बचाओ! भैंसो, सावधान हो जाओ! ज़ेबरो, चौकस रहो! शेर शिकार पर निकला है!

यह कैसा बादल गरजा? झाड़ियों-झुरमुटों में यह कैसी गूंज फैली? यह तो शेर दहाड़ा है! सभी जानवर दुबक गये है।

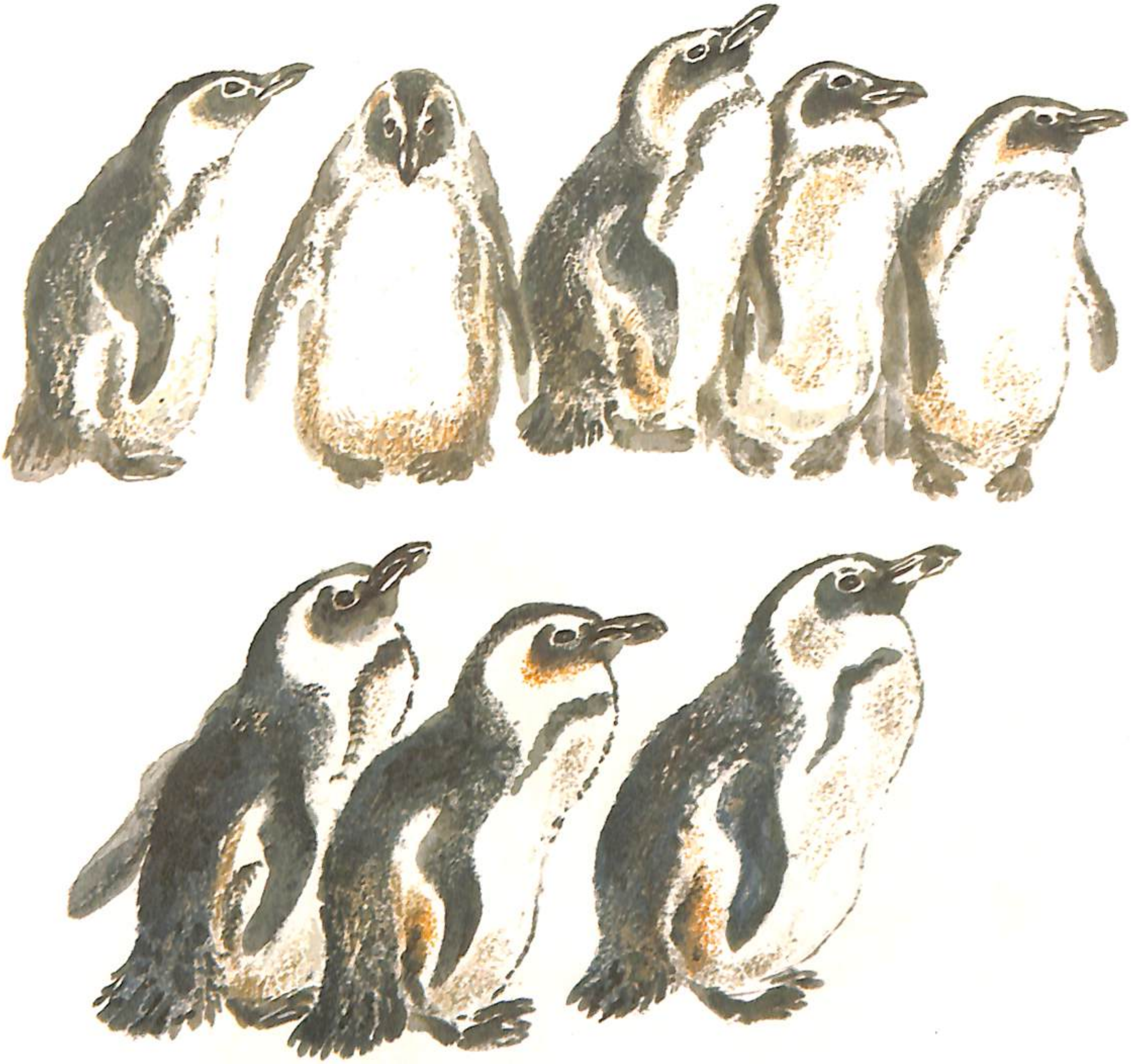
शेर सबसे अधिक बलवान है। सभी जानवर उससे डरते हैं। बड़े तेज़ हैं उसके नाखून और पैने हैं दांत। उसके सिर और गर्दन पर घने बाल हैं, जिन्हें अयाल कहते हैं।

आज कौन उसकी पकड़ में आयेगा?



पेंग्विन

पेंग्विन बड़ा अनोखा पक्षी है—इसके जैसा और कोई पंछी नहीं है। वह हवा में नहीं, पानी में उड़ता है। डुबकी लगाकर अपने छोटे-छोटे पंख इतनी ज़ोर से चलाता है कि तेज़ी से तैरती मछली को भी जा पकड़ता है। ज़मीन पर उसके चलने का ढंग भी अजीब है—एकदम सीधा तनकर चलता है। दूर से देखने पर लगता है कि काला कोट और सफ़ेद वास्कट पहने कोई आदमी चला आ रहा है।



एक बार एक जहाज़ भटककर ठंडे सागर में जा पहुंचा। आखिर मल्लाहों को ज़मीन नज़र आयी, जहाज़ उधर बढ़ा और मल्लाहों ने देखा कि वहां तट पर तो पूरी फ़ौज तैनात है। जब वे पास पहुंचे तो सारी फ़ौज ने पानी में डुबकी लगा दी! अब मल्लाहों की समझ में आया कि यह फ़ौज नहीं थी, ये तो पेंग्विन थे।

ह्वेल

संसार में सबसे बड़ा पशु ह्वेल है। ह्वेल समुद्र में रहती है, मछली की तरह पानी में तैरती है।

ह्वेल मछलियों के झुंड का पीछा करते हुए कभी उत्तर में पहुंच जाती है, जहां चारों ओर बर्फ़ ही बर्फ़ होती है, और कभी दक्षिण में, जहां बारहों महीने गर्मी होती है।



ह्वेल मछलियों के झुंड पर झपटती है और सारा का सारा झुंड पानी समेत उसके मुंह में समा जाता है। पानी मुंह से निकल जाता है और मछलियां वहीं रह जाती हैं। ह्वेल के ऊपरी जबड़े में नुकीली पट्टियों की दो कतारें होती हैं, इन दांतों को कचकड़े क़हते हैं।



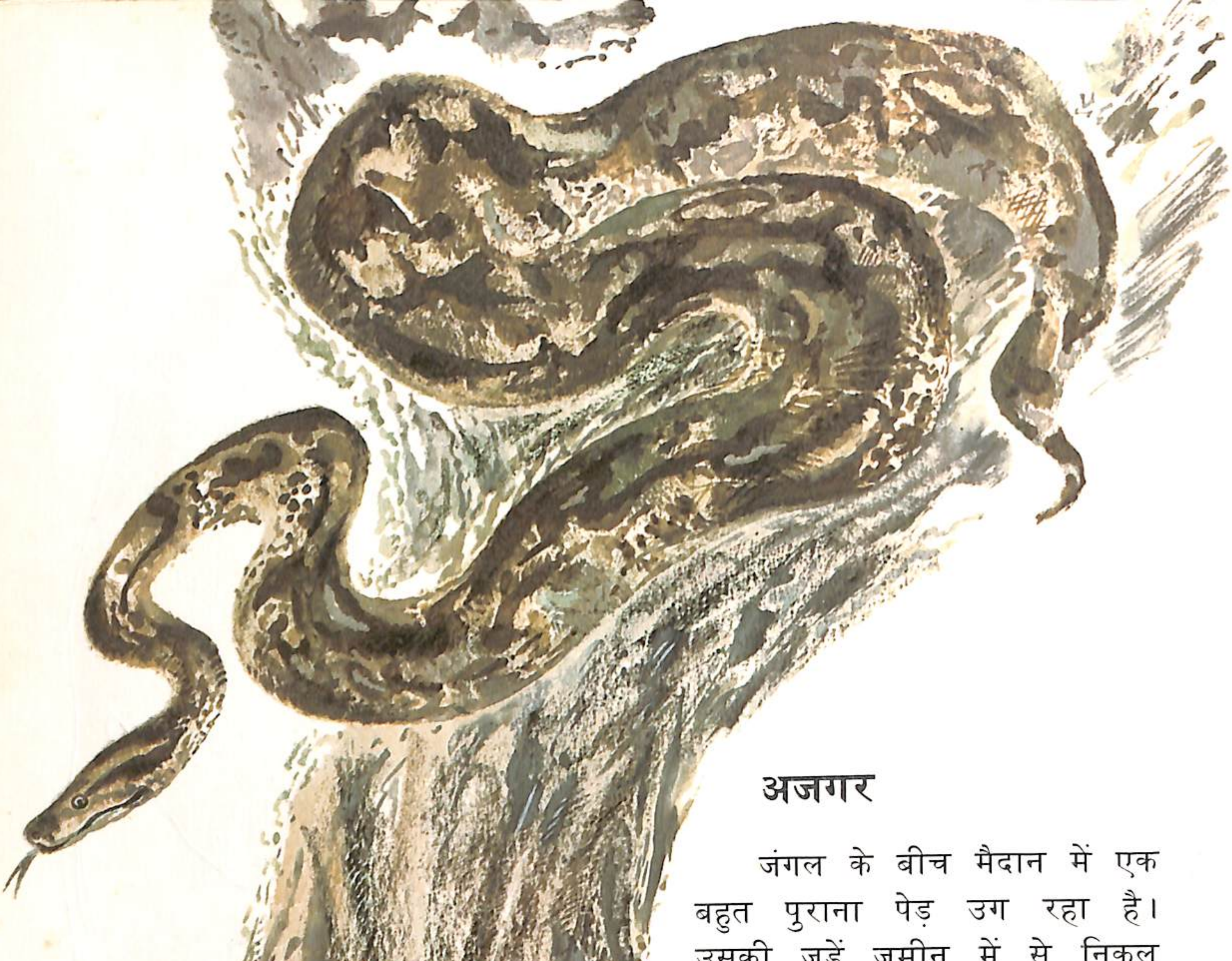
हाथी

कहीं कोई टहनी नहीं चटकती, कोई पत्ता नहीं हिलता—ऐसे दबे पांव हाथी जंगल से निकलता है। पास से देखो तो लगता है काला पहाड़ खड़ा है। टांगें उसकी तनों जैसी हैं, कान नाव के पालों जैसे और बाहर निकले दो लंबे दांत टेढ़े और मज़बूत। अपनी सूंड़ से वह पूरी झाड़ी जड़ समेत उखाड़ लेता है और मुंह में डालकर धीरे-धीरे चबाता है।

हाथी इतना ताकतवर है कि वह किसी से नहीं डरता।







अजगर

जंगल के बीच मैदान में एक बहुत पुराना पेड़ उग रहा है। उसकी जड़ें ज़मीन में से निकल आयी हैं, मोटी डालें मुड़कर आपस में गुंथ गयी हैं। एक डाल तो तने पर सांप की तरह लिपटी हुई है। यह तो सचमुच ही डाल नहीं, सांप है—शक्तिशाली और भयानक अजगर।

सतर्क हिरन पेड़ तले से नहीं गुज़र सकता, कोई छोटा जानवर पास से नहीं निकल सकता, पेड़ पर कोई पंछी नहीं बैठ सकता—अजगर झट से उसे अपनी कुंडली में दबोच लेगा और हड़प जायेगा।



काकातुआ

काकातुआ जंगल में पेड़ पर बैठा अपनी कलगी से खेल रहा है: पंखे की तरह कभी उसे समेट लेता है, कभी खोल देता है। यह तोता तरह-तरह की आवाज़ें निकालने, सबकी नकल उतारने में माहिर है। कभी जंगली सूअर की तरह घुरघुराता है, कभी मांद में बैठे जानवर की तरह गुर्राता है, तो कभी चिड़ियों की तरह चहचहाता है।

यह आदमियों की बोली भी सीख सकता है। चाहो तो हिंदी सिखा दो, या रूसी, या और कोई भी भाषा। हां, इसे यह पता नहीं होता कि क्या बोल रहा है।

मैंने तो एक बार ऐसा काकातुआ भी देखा था, जो गाने गाता था।



दरियाई घोड़ा

दरियाई घोड़ा अपनी ठूंठ जैसी छोटी-छोटी टांगों पर मुश्किल से चलता है। और जब चलता है तो इसका सारा चाम थलथल हिलता है। इतना पेटू है यह कि जिस मैदान में चला आयेगा, वहां की सारी घास और पौधे खा जायेगा, जो नहीं खा पायेगा, उन्हें रौंद डालेगा। फिर नदी में सुस्ताने चला जाता है। नदी का पानी तो इसके लिए नरम सेज ही है। जब इसका आराम पूरा हो जाता है तो खेलने लगता है। नदी में यह बेढब नहीं, बड़ा फुर्तीला जानवर होता है। तैरता है, डुबकियां लगाता है, नदी के तले पर उगते शैवाल तोड़ता है। बीच-बीच में संदूक जैसा अपना मुंह खोलकर चिंघाड़ता है, लगता है, जैसे दसियों घोड़े एकसाथ हिनहिनाये हों।



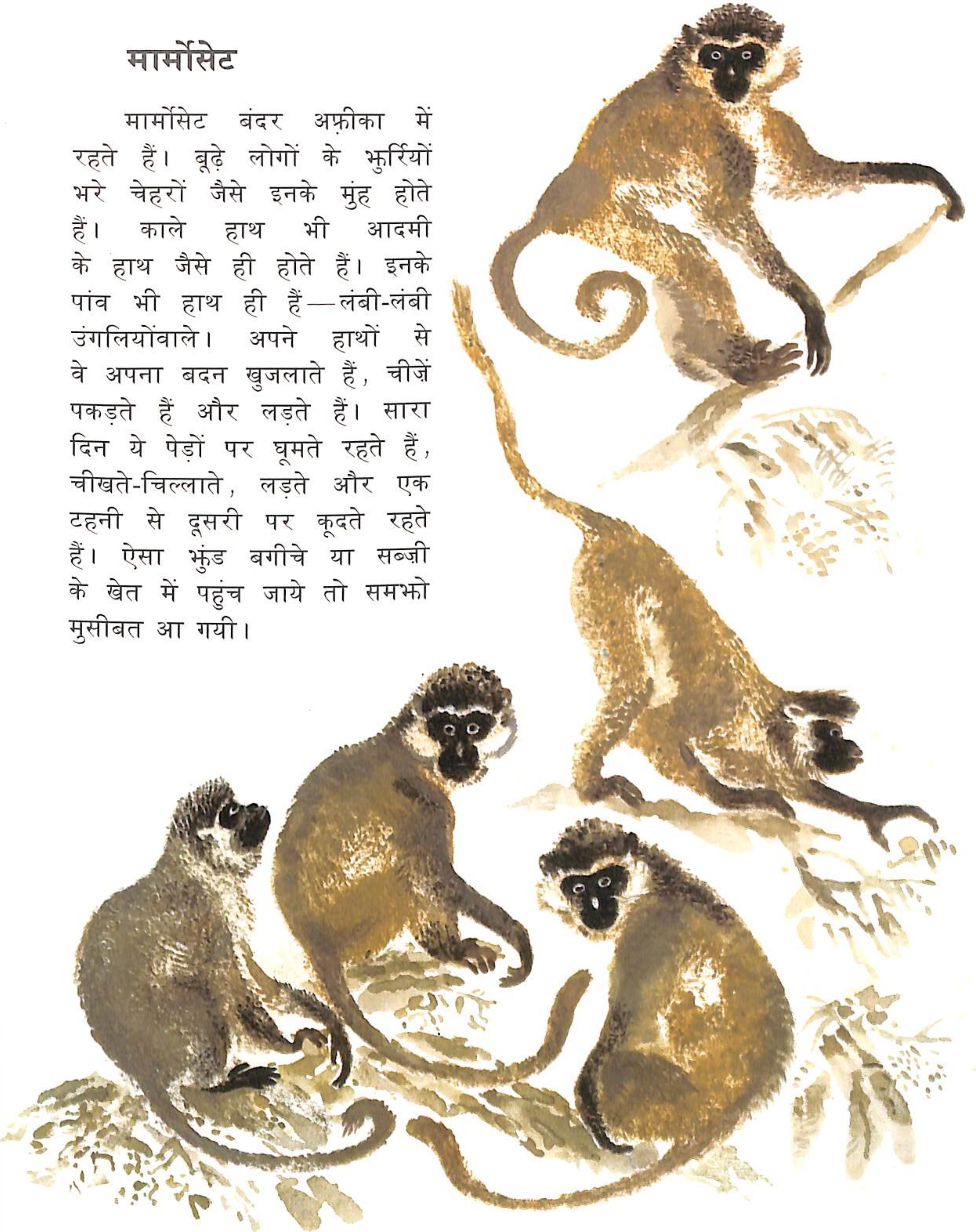
ओरंग उटान

ओरंग उटान लाल-कत्थई बालोंवाला विशाल वानर है। मलय भाषा में ओरंग उटान का अर्थ है बनमानुस। मलय लोग इसके बारे में एक कहानी सुनाते हैं। कहते हैं पहले वह मनुष्य था और सभी लोगों की तरह गांव में रहता था। लेकिन वह काम नहीं करना चाहता था, सो जाकर जंगल में पेड़ पर रहने लगा। उसके बदन पर लाल से बाल उग आये और वह वानर बन गया।



मार्मोसेट

मार्मोसेट बंदर अफ़्रीका में रहते हैं। बूढ़े लोगों के भुर्रियों भरे चेहरों जैसे इनके मुंह होते हैं। काले हाथ भी आदमी के हाथ जैसे ही होते हैं। इनके पांव भी हाथ ही हैं—लंबी-लंबी उंगलियोंवाले। अपने हाथों से वे अपना बदन खुजलाते हैं, चीज़ें पकड़ते हैं और लड़ते हैं। सारा दिन ये पेड़ों पर घूमते रहते हैं, चीखते-चिल्लाते, लड़ते और एक टहनी से दूसरी पर कूदते रहते हैं। ऐसा झुंड बगीचे या सब्ज़ी के खेत में पहुंच जाये तो समझो मुसीबत आ गयी।





मगरमच्छ

मगरमच्छ छिछले पानी में लेटा धूप सेंकता रहता है। ज़रा भी हिलता-डुलता नहीं, पैने दांतोंवाला अपना मुंह बंद रखता है। देखने में लगता है कोई जानवर नहीं, सड़ता लट्ठा पड़ा हुआ है।

तट के पास ही पानी में लेटा मगरमच्छ अपने शिकार का इंतज़ार करता है। प्यास बुझाने कोई जानवर नदी पर आयेगा, तो यह अपनी मज़बूत पूंछ मारकर उसे गिरा देगा, पैने दांतों में उसे दबोच लेगा और पानी में, तले पर खींच ले जायेगा।











वालरस

मोटे-तगड़े, भारी-भरकम वालरस को तो चर्बी से भरा चमड़े का बोरा ही समझो।

उसकी घनी मूंछों तले से हाथी जैसे दो लंबे दांत निकले होते हैं। उसकी टांगों के अंत में पांव नहीं मीनपक्ष होते हैं, जिनसे वह चप्पुओं का काम लेता है।

गहरी डुबकी लगाकर वह समुद्र के तले पर ऐसे ही चरता है, जैसे चरागाह में गाय। समुद्र में उगती वनस्पतियां—शैवाल—खाता है, सीपियां ढूंढ़ता है। जी भरकर चरने के बाद पानी की सतह पर आ जाता है, हिमखंड के सिरे या तट पर दांत टिकाकर ऊपर उठता है और पानी से बाहर निकल आता है, फिर पत्थरों पर लेटकर आराम करता है।



सफ़ेद भालू

सफ़ेद भालू घुमक्कड़ जानवर है। उसके घने बाल पानी में भीगते नहीं और खाल इतनी मोटी होती है कि तेज़ से तेज़ पाले, बर्फ़ीली आंधियों और बेहद ठंडे पानी की भी उसे परवाह नहीं होती।

अपने शिकार की खोज में वह हिम और बर्फ़ पर चलता रहता है। मछली या छोटा वालरस पकड़कर जल्दी से उसे खा लेता है और वहीं बर्फ़ पर लेटकर सो जाता है। नींद पूरी होने पर फिर से आगे चल देता है। इधर-उधर देखता है, सूंघता है कि कहीं खाने को कुछ मिले।

सफ़ेद भालू बहुत तेज दौड़ता है, फुर्ती से तैरता है और आसानी से डुबकी लगाता है। सो वह ज़्यादा देर तक भूखा नहीं रहता, पेट भरने को कुछ न कुछ हासिल कर ही लेता है।





गैंडा

पेड़ हिल और कांप रहे हैं, टहनियां चटक रही हैं—भीमकाय जानवर गैंडा घने जंगल में बढ़ता चला आ रहा है। कांटों, सख़्त टहनियों, पेड़ों के ठूंठों की उसे परवाह ही नहीं। उसकी खाल इतनी मोटी है कि भाला टकराकर गिर पड़े और तीर टूट जाये। बंदूक की गोली ही उसे बींध सकती है।

गैंडे की नाक पर बड़ा-सा सींग होता है। उसकी आंखें बिल्कुल छोटी-छोटी होती हैं और वह उनसे अच्छी तरह देख नहीं पाता। उसे कुछ पता तो चलता नहीं, बस, सामने कोई दिखा और वह उस पर टूट पड़ा।

बड़ा गुस्सैल और शक्की जानवर है।



रेनडियर

धुर उत्तरी इलाकों में गर्मियां तो बस कुछ दिनों की ही होती हैं। शेष सारा समय यहां हिम और बर्फ़ का राज रहता है। यहां न गाय पाली जा सकती है, न घोड़ा, क्योंकि नौ-दस महीने के जाड़े में उन्हें खिलाने के लिए घास कहां से आयेगी। यहां तो उत्तरी हिरन—रेनडियर—ही रह सकता है। वह अपने खुरों से बर्फ़ खोद लेता है और उसके नीचे दबी काई पा लेता है।

उत्तर में आदमी को दूध और गोश्त कौन देता है? रेनडियर।

लोगों की स्लेजगाड़ी कौन खींचता है? रेनडियर। उसके बिना तो धुर उत्तर में लोग जी ही न पायें।









जंगल में

बिज्जू

वसंत आया, हिम पिघल गया। बिज्जू अपनी सूखी मांद में से बाहर निकल आया। अभी वह पूरी तरह जागा नहीं है। भालू की तरह जाड़े भर सोता रहा है। उसकी बगलों पर बाल जटाओं जैसे उलझ-पुलझ गये हैं। झबरीला, कमज़ोर नज़रवाला जानवर है यह। अंगड़ाइयां लेकर अपनी सुस्ती दूर करता है।

बिज्जू मेंढक पकड़ता है, जड़ों तले काई में गुबरैले ढूंढ़ता है। खा-पीकर अपनी सूखी मांद में वापस चला जाता है।





गिलहरी

चीड़-देवदार पर रहनेवाली गिलहरी का चिलगोजे खाते-खाते जी भर गया है, एक टहनी से दूसरी पर कूदती वह पेड़ से ज़मीन पर उतर आयी है—खुंबियां खायेगी।

गिलहरी री, गिलहरी! तुझे खुंबियों की पहचान है न? देख, यह सफ़ेद-सफ़ेद दानोंवाली लाल खुंबी मत खाइयो! यह देखने में ही सुंदर है, खाने में तो एकदम ज़हरीली है, मक्खीमार नाम है इसका।





सारस

दलदल में काई के ढूह पर सारस सो रहा था। जागा, चोंच से पर संवारे और पूरे ज़ोर से क्रेंकार की।

उड़कर मटर के खेत में चला गया। दाने चुगे। नदी पर जाकर पानी पिया, निर्मल जल में अपनी छवि देखी। कितना सलोना है — लंबी-लंबी टांगें, पतली गर्दन, रंग सुरमई! सारस ने पंख फैलाये और पांवों से थाप देता, थिरकता नाचने लगा। जल में अपनी छवि निहारने लगा।



जंगली सूअर

जंगली सूअर घुरघुराता हुआ वन में दौड़ता रहता है। बलूतफल खाता है।

जंगली सूअर के मुंह से बाहर निकले दो पैने मज़बूत दांतों को खांग कहते हैं। खाने की तलाश में वह अपने लंबे थूथन से ज़मीन खोदता और खांगों से जड़ें काटता है। इन खांगों से वह पेड़ तक काट सकता है और भेड़िये को भी मार सकता है। भालू तक जंगली सूअर से डरता है।





बनबिलाव

बनबिलाव बड़े कुत्ते जितना होता है। उसकी दुम छोटी होती है और खाल पर चकत्ते। पेड़ पर चढ़कर वह मोटी डाल पर लेट जाता है, घात लगाता है। इस पेड़ के नीचे से जो गुज़रा उसकी खैर नहीं। बनबिलाव पेड़ से कूदकर अपने तीखे पंजों से उसे दबोच लेगा।





भालू

भालू मीठे का शौकीन है। चटकारे ले-लेकर जंगली बेरियां खाता है। एक-एक दाना नहीं तोड़ता, पूरी झाड़ी ही चाट लेता है—बूची टहनियां ही बचती हैं।

बड़ा पेटू है रे, भालू! बड़ा ही लालची है तू!

देख, इतने खा-खाके कहीं तेरा पेट न दुखने लगे।









लोमड़ी

जाड़ों में लोमड़ी चूहे पकड़ती है। यह देखो ठूंठ पर खड़ी होकर ध्यान से देख और सुन रही है। हिम तले कोई हलचल हुई, कहीं किसी चूहे ने चीं-चीं की—बस, लोमड़ी झपटी। और यह लो, चूहा उसके जबड़ों में आ गया।

ऐसी है यह लाल बालोंवाली झबरीली लोमड़ी।

खरगोश

यह जंगली खरगोश है। इसकी नरम-नरम घने रोयोंवाली खाल खूब गरम होती है और बिल्कुल दूधिया सफ़ेद। यह उसे ठंड से भी बचाती है और शिकारी से भी। हिम सफ़ेद होता है और खरगोश भी। ऐसे में वह भला कैसे नज़र आये?! जब तक शिकारी उसे देख पाये, वह नौ दो ग्यारह हो जाता है।

जाड़ों में खरगोश झाड़ियों की कड़वी छाल कुतरता है। पर गर्मियों में उसकी मौज होती है। कितनी ही तरह के घास-पात वह खा सकता है और पराग भरे फूल भी।

सो, खरगोश भैया, हमारी तरकारी की क्यारियों में मत आना, गाजर, बंदगोभी खराब मत करना।





उल्लू

उल्लू के पर कोमल होते हैं और उसके पंख ज़रा भी आवाज़ नहीं करते। उसके नाखून तिरछे और पैने होते हैं। सो, जब इसके पंजे में कोई चूहा, गिलहरी या चिड़िया फंस जाये तो उसके बचने का कोई उपाय नहीं है। उल्लू रात को शिकार करता है और दिन में सोता है।

दो टोमटिट चिड़ियां पेड़ की टहनियों पर फुदक रही थीं। अचानक उन्हें उल्लू दिख गया और वे लगीं चिचियाने: "इधर आओ, चिड़ियो, इधर आओ! यह रहा वह, यह रहा लुटेरा, जो रात को सब पर झपटता है!"

कांटाचूहा

बच्चे जंगल में घूम रहे थे। एक झाड़ी तले उन्हें कांटाचूहा मिला। वह डर के मारे सिमटकर गोला बन गया था, चारों ओर उसके कांटे निकले हुए थे। कौन उसे हाथ लगाये? बच्चों ने डंडी से उसे टोपे पर लुढ़का लिया, घर ले आये। फ़र्श पर रखा और प्लेट में दूध दिया।

कांटाचूहा गोला बना पड़ा था, हिल-डुल नहीं रहा था।

घंटे भर तक ऐसे ही पड़ा रहा।

फिर कांटों में से उसकी काली नाक बाहर निकली और सिकुड़ी। हुं, यह खुशबू कैसी है? कांटाचूहा सीधा हो गया। अब उसने दूध देखा और पीने लगा। दूध पीकर फिर से गोला बन गया।

उधर बच्चे किसी और काम में लग गये, उन्हें कांटाचूहे का ध्यान नहीं रहा और वह मौका देखकर वापस जंगल में भाग गया।

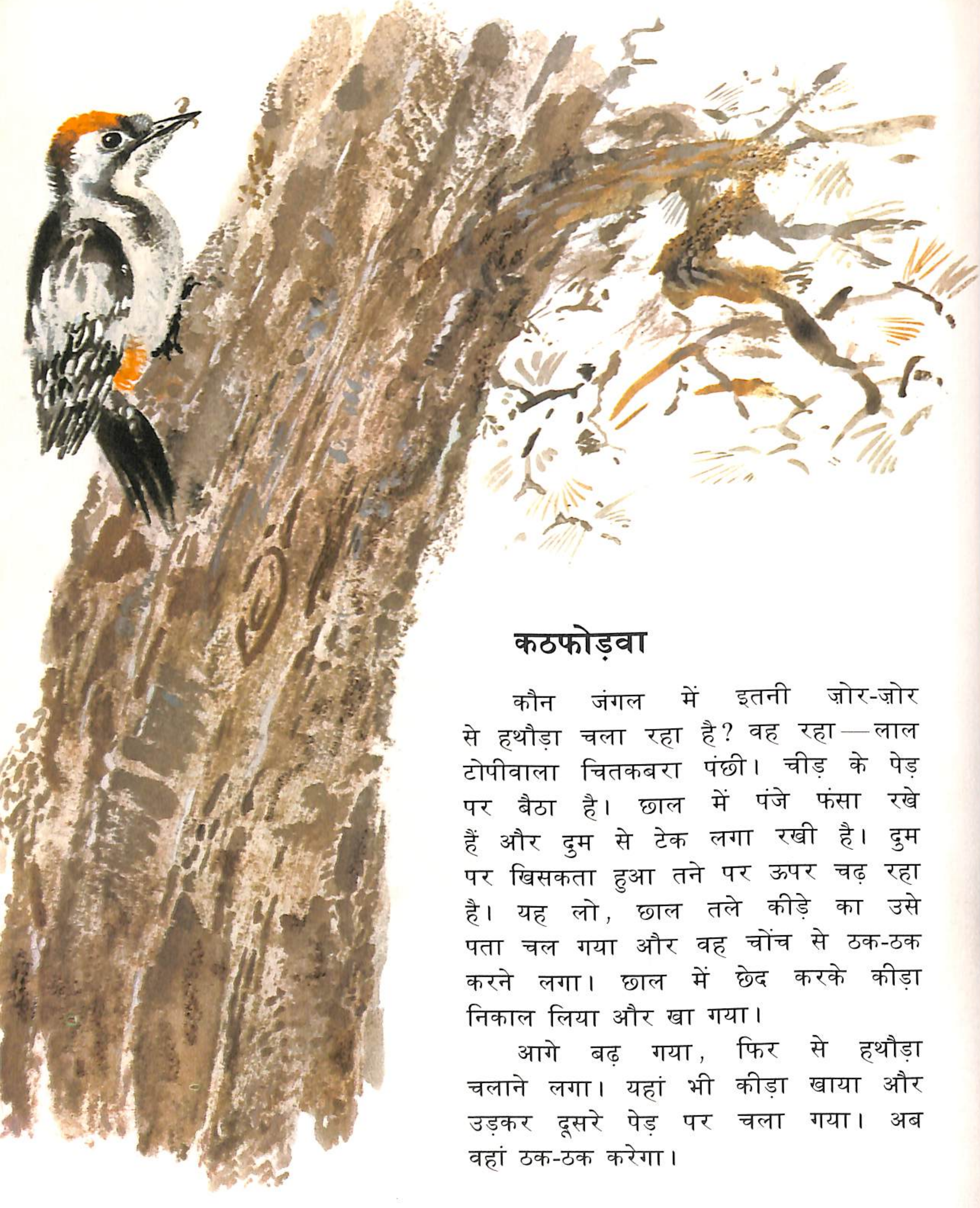




गेहुंअन

गुलाबी धूप खिली। ठंडी ज़मीन में से, जड़ों के नीचे से गेहुंअन सांप निकल आया। धूप में गरमाये ठूंठ पर चढ़कर लेट गया। गेहुंअन ज़हरीला सांप है—जिस जानवर को काटता है, वह मर जाता है और तब गेहुंअन उसे निगल जाता है।

देखो, तुम नंगे पांव जंगल में मत घूमना। कहीं गेहुंअन ने काट लिया तो बहुत दिनों तक बीमार रहोगे।



कठफोड़वा

कौन जंगल में इतनी ज़ोर-ज़ोर से हथौड़ा चला रहा है? वह रहा—लाल टोपीवाला चितकबरा पंछी। चीड़ के पेड़ पर बैठा है। छाल में पंजे फंसा रखे हैं और दुम से टेक लगा रखी है। दुम पर खिसकता हुआ तने पर ऊपर चढ़ रहा है। यह लो, छाल तले कीड़े का उसे पता चल गया और वह चोंच से ठक-ठक करने लगा। छाल में छेद करके कीड़ा निकाल लिया और खा गया।

आगे बढ़ गया, फिर से हथौड़ा चलाने लगा। यहां भी कीड़ा खाया और उड़कर दूसरे पेड़ पर चला गया। अब वहां ठक-ठक करेगा।

वन कुक्कुट

बड़ा सुंदर पंछी है यह। सारा का सारा काला, बस "भौंहें" लाल। टांगें इसकी छोटी-छोटी होती हैं और उन पर घने रोयें होते हैं, जैसे कि यह नमदे के बूट पहने हो। ठंड से बचने के लिए हैं ये रोयें।

जाड़ों में काला वन कुक्कुट भोजवृक्ष की डाल पर बैठा उसकी सूखी मंजरी चुगता है। जब उसका सोने का वक्त आता है तो ज़मीन पर फैले हिम पर सीधा सिर के बल गिरता है। हिम में धंसकर एक-दो बार करवट बदलता है—बस, हिम में उसका शयन कक्ष बन जाता है, उसी में वह सारी रात सोता रहता है। वसंत में वन कुक्कुट जंगल के मैदानों में जमा होते हैं—जोड़े बनाने के लिए। नर कुक्कुट उछलते और लड़ते हैं। भांति-भांति के स्वरों में गाते हैं।



भेड़िया

खबरदार! खबरदार! मेमना हो या भेड़, बछड़ा हो या गाय, बछेड़ा हो या घोड़ी—सबकी जान खतरे में है!

भेड़िया जंगल से निकला है।

गांव के कुत्ते ज़ोर-ज़ोर से भौंकते हैं!

लो, चौकीदार ने बंदूक थाम ली!

अब तो भेड़िये, तू ही अपनी जान बचा!







हमारे आंगन में







कुत्ता

यह हमारे फ़ार्म का कुत्ता है। इसका नाम शारिक है। देखा, इसके बाल कितने घने हैं, इसीलिए यह जाड़ों में भी बाहर आंगन में रहता है, इसे ठंड नहीं लगती। इसके छोटे-से घर को गरम करने के लिए कोई अंगीठी नहीं है, उसमें बस सूखी घास बिछी हुई है। शारिक फ़ार्म के अहाते की रखवाली करता है, चोरों को अंदर नहीं आने देता। सभी किसान उसे प्यार करते हैं, अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को देते हैं।

बिल्ली

बिल्ली ने कोठरी में चूहा पकड़ा और मालकिन से उसे इनाम में दूध मिला। बिल्ली का पेट भरा हुआ है, वह अपनी दरी पर बैठी खुशी से म्याऊं-म्याऊं कर रही है। उसका बिलौटा छोटा-सा है, उसे यों बैठे-बैठे म्याऊं-म्याऊं करने में मज़ा नहीं आता। वह अपना खेल खेल रहा है—घूम-घूमकर अपनी ही पूंछ पकड़ने की कोशिश कर रहा है। कभी सोचता है उसके सामने कोई दुश्मन है—रोंगटे खड़े करके उसे तरेरता है, फुफकारता है।





खरगोश

अब पालतू खरगोश देखो। मां खरगोश अपने दो छोटे-छोटे बच्चों के साथ बैठी है। उनके कान लंबे हैं, दुमें छोटी-सी, आंखें गोल-गोल। मां की ही तरह वे भी घास खाते हैं। हूबहू मां जैसे हैं। नन्हा खरगोश घास का तिनका चबा रहा है, उसकी सारी थूथनी चलती है, नाक भी इधर-उधर हिलती है और तिनका मुंह में जाता रहता है। एक तिनका खाकर वह दूसरा लेता है। जाकर उनके लिए गाजर, बंदगोभी का पत्ता और रोटी का टुकड़ा लाता हूं—चबा लें।



सूअर

यह है सूअर। है न निरा सूअर। कीचड़ में लोटता रहा है। सारा बदन और थूथन भी कीचड़ से सना हुआ है।

"जा रे, जाके नदी में नहा ले। नहीं जाना? तो जा, बाड़े में चला जा, वहां रगड़-रगड़कर तुझे साफ़ करेंगे—साफ़-सुथरा हो जायेगा।"

"घुर्र-घुर्र। मुझे नहीं होना साफ़-सुथरा।"



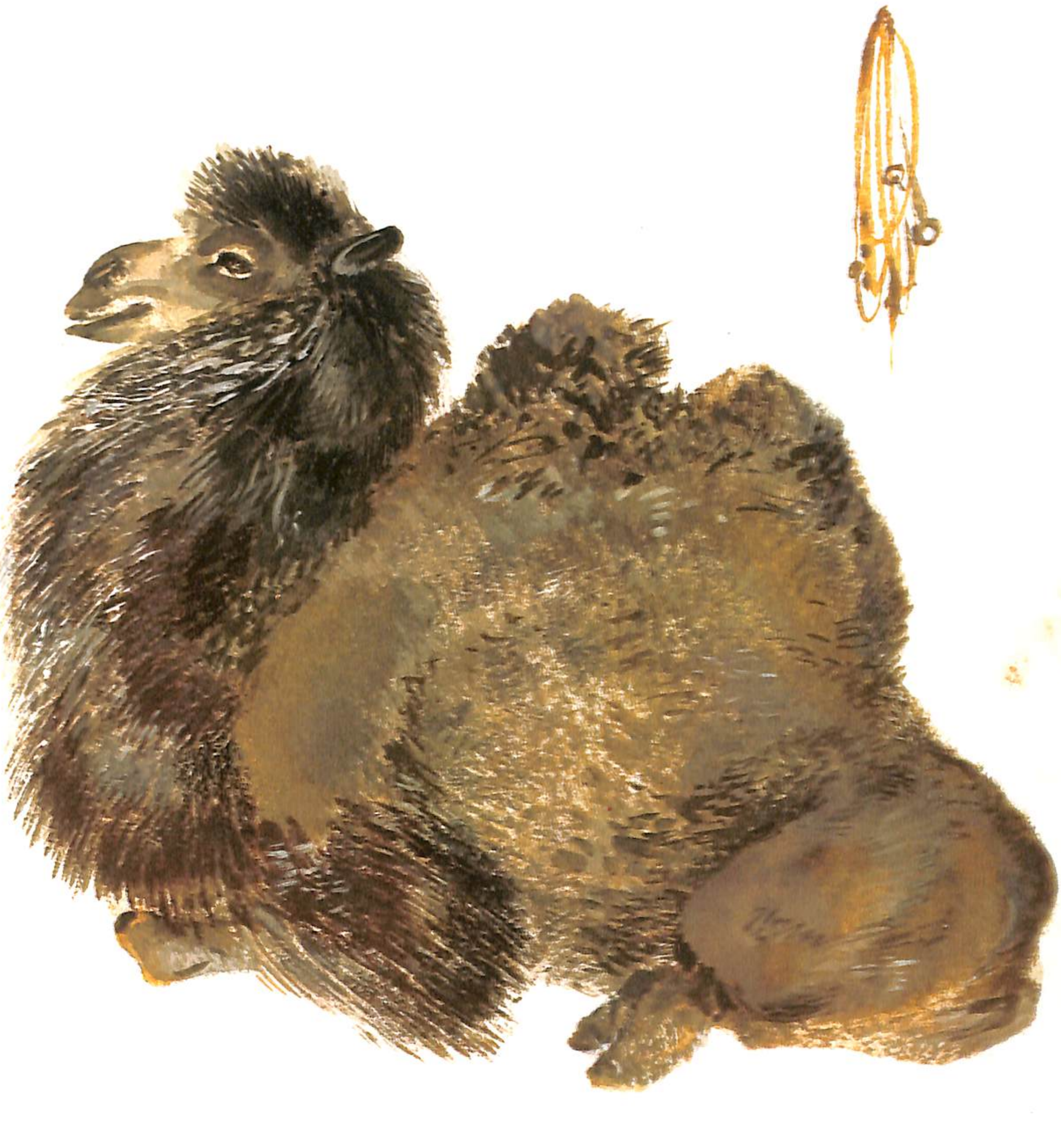


ऊंट

ऊंट बड़ी दूर से भारी गट्ठर पीठ पर लादकर लाया है। इतना थक गया है कि दुबला हो गया है। आखिर घर पहुंचकर आराम कर रहा है। टांगें समेटकर बैठ गया है, घास चर रहा है। देखो, उसे छेड़ना नहीं, नहीं तो गुस्सा खा जायेगा, तुम पर थूक देगा।





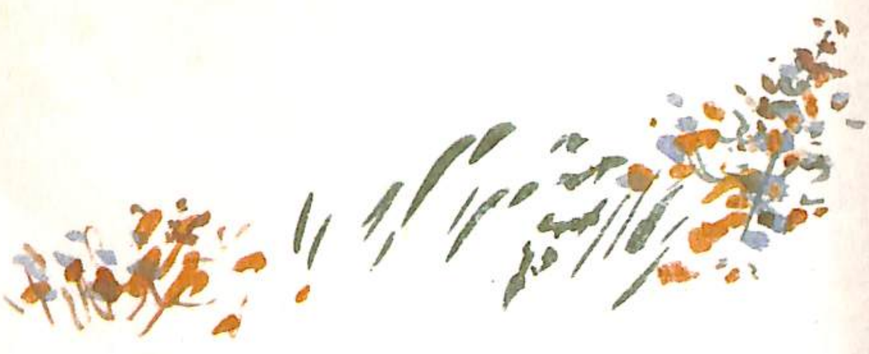




गाय

हरे मैदान में गैया घास चर रही है। उसके सींग टेढ़े हैं, बगलें मोटी और थनों में दूध भरा है। वह पूंछ हिला-हिलाकर मक्खियां उड़ा रही है।

"गैया-गैया, तुझे क्या अच्छा लगता है—हरी घास या मीठे फूल-पात? देख, कितने रंग-बिरंगे, मीठे-मीठे, पराग भरे फूल खिले हैं। खा ले, खा ले, तेरा दूध भी ज़्यादा मीठा हो जायेगा। ग्वालिन तुझे दुहने आ रही है। बाल्टी भर मीठा-मीठा दूध देगी न?"





मुर्गाबी

मुर्गाबी सारा-सारा दिन तालाब में तैरती और डुबकियां लगाती रहती है। चोंच से अपने पर संवारती रहती है। पर संवारकर पानी में अपनी शक्ल देखती है और बोलती है:

"क्रां-क्रां! कितनी सुंदर हूं मैं!"





मुर्गी

मुर्गी अपने चूज़ों के साथ आंगन में टहल रही थी। अचानक बारिश आ गयी। मुर्गी तुरंत ज़मीन पर बैठ गयी, अपने सारे पर फुला लिया और कुड़-कुड़ करने लगी। इसका मतलब है: आओ, चूज़ो, जल्दी से छिप जाओ। सभी चूज़े आकर उसके पंखों तले दुबक गये, गरम-गरम परों में सिमट गये। कोई तो बिल्कुल ही छिप गया है, किसी के सिर्फ़ पंजे नज़र आ रहे हैं, किसी का सिर बाहर निकला हुआ है, तो किसी की एक आंख ही दिख रही है।

दो चूज़ों ने मां का कहना नहीं माना, दुबके नहीं। खड़े-खड़े चीं-चीं कर रहे हैं और हैरान हो रहे हैं: यह सिर पर क्या टपक रहा है?

घोड़ा

यह एक जवान घोड़ा है। वह चरागाहों में दौड़ता है, ज़ोर से हिनहिनाता है, ज़मीन पर सुम पटकता है। उस पर अभी किसी ने ज़ीन नहीं कसी है, न उसे गाड़ी में जोता है। वह आज़ादी से रह रहा



है, ताकत बटोर रहा है। उसकी खूब टहल होती है—नये मालिक के लिए उसे तैयार किया जा रहा है। मालिक उसका अच्छा होगा। ऐसी उम्दा नस्ल का घोड़ा तो गाड़ी में नहीं जोता जाता। वह तो घुड़दौड़ में हिस्सा लेगा, सबसे आगे दौड़ेगा।





मेढ़ा

बाप रे, कितने खूंखार सींग हैं इसके! पर ऊन उतना ही नरम है। यह आम मेढ़ा नहीं है, बड़ी उम्दा नस्ल का है। इसका ऊन घना है और ऊन के रेशे पतले-पतले। इस ऊन से स्वैटर, जुराबें, दस्ताने बड़े अच्छे बनेंगे। सारे कपड़े इस ऊन से बनाये जा सकते हैं। सभी खूब गरम होंगे। हमारे फ़ार्म में ऐसे मेढ़ों और भेड़ों का पूरा रेवड़ है।

बकरी

गांव की गली में बकरी चली जा रही है, घर पहुंचने की जल्दी में है। वहां मालकिन इसे चारा देगी, पानी पिलायेगी। मालकिन अगर किसी काम में फंस गयी तो बकरी अपना ख्याल खुद कर लेगी। ड्योढ़ी में रखा झाड़ू चबा लेगी, रसोई में रोटी उठा लेगी, क्यारियों में पौध चर लेगी, बगीचे में सेब के पेड़ की छाल उतार लेगी। ऐसी चोट्टी है! पर दूध तो इसका बहुत ही अच्छा है, मुझे तो गाय के दूध से भी ज़्यादा स्वाद लगता है।





टर्की

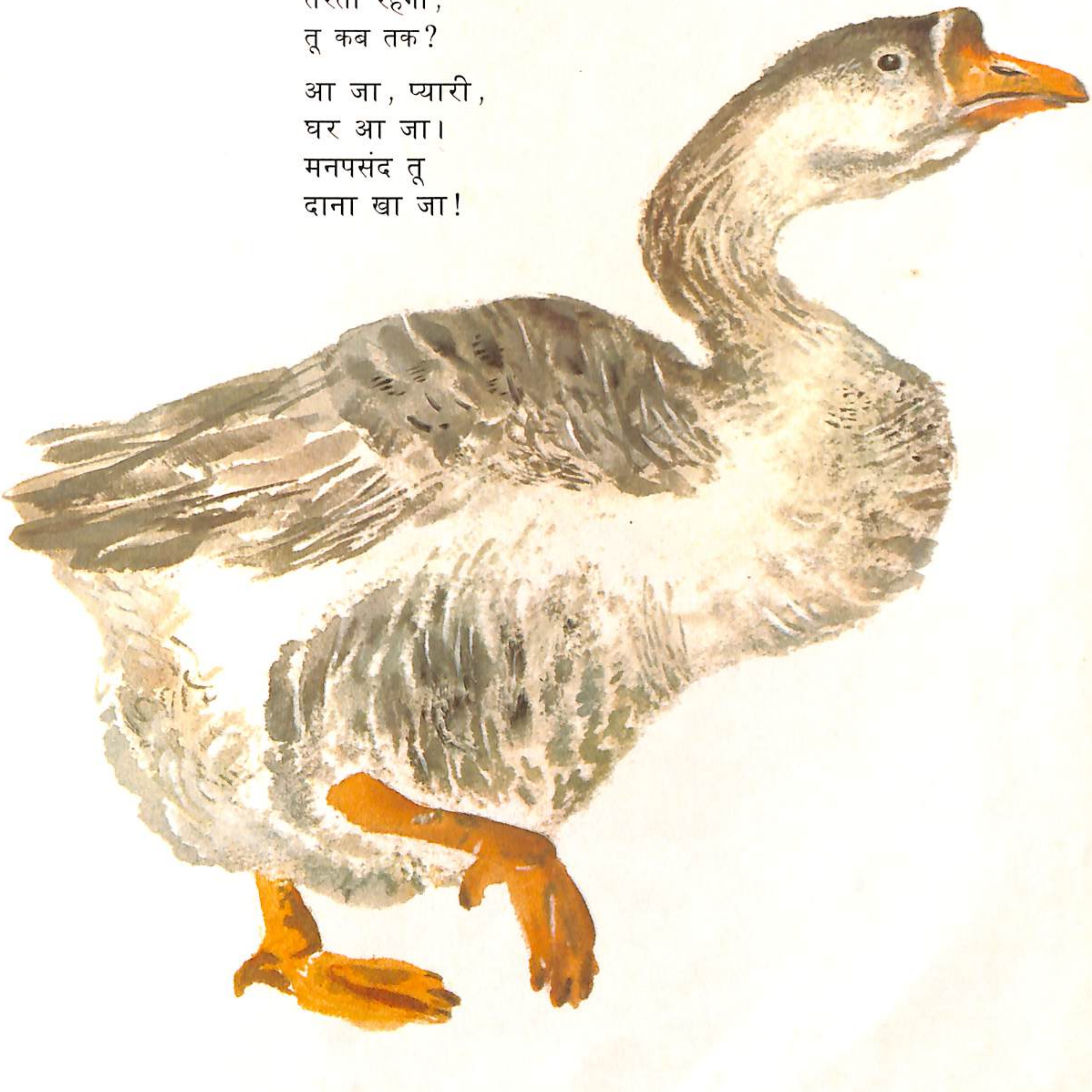
यह पक्षी पहले अमरीका में ही होता था, अब सारी दुनिया में पाला जाता है। कभी इसे अहाते में टहलते देखो, बड़ा मज़ेदार नज़ारा होता है: पर फुलाये, पूंछ फैलाये और पंख लटकाये अकड़ भरी चाल से चलता जाता है। स्वभाव से बड़ा गुस्सैल होता है। बच्चे इसे छेड़ते हैं तो फूलकर कुप्पा हो जाता है और गुस्से में बु-बु-बु-बु करने लगता है।

बत्तख

बत्तख सुबह से तालाब में तैर रही है। अब उसे नाश्ता करना चाहिए।

बत्तख, बत्तख,
तख-तख-तख।
तैरती रहेगी,
तू कब तक?

आ जा, प्यारी,
घर आ जा।
मनपसंद तू
दाना खा जा!



गधा

गधे को गोखरू के झाड़ में बांध दिया है। गोखरू के पत्ते गधे के लिए सबसे बढ़िया भोजन हैं। गधा सारे पत्ते खा गया है, पर सबसे स्वाद पत्ते तो दूर ही रह गये, गले की रस्सी छोटी है। गधा चिल्लाया :

"ढेंचू ! ढेंचू ! ढेंचू !"

बड़ी मोटी और भोंडी आवाज़ है गधे की। पांच किलोमीटर दूर तक सुनायी देती है। जाओ, भई, गधे को दूसरी जगह बांध दो।





गरम और ठंडे देशों के जानवर	3
जंगल में	29
हमारे आंगन में	51





Е. Чарушин

МОЯ ПЕРВАЯ ЗООЛОГИЯ

На языке хинди

E. Charushin

MY ANIMAL BOOK

In Hindi

ISBN 5-05-003235-0



एकलव्य
अध्ययन केन्द्र मालाखेड़ी
होशंगाबाद फोन- 277267



"मेरा सारा बचपन जंगली जानवरों और पालतू पशु-पक्षियों के बीच बीता। अपने बचपन की ही बदौलत मैं चित्रकार और लेखक बना हूं, क्योंकि बचपन की सभी स्मृतियां आज भी मेरे लिए सबसे ज्वलंत, रोचक और महत्त्वपूर्ण स्मृतियां हैं।"

येव्गेनी चारूशिन ने अपने बारे में यह लिखा। वह सोवियत संघ के जाने-माने चित्रकार थे। बच्चों के लिए उन्होंने पशु-पक्षियों के बारे में बहुत-सी किताबें लिखीं। उनकी सहृदयता और मृदु स्वभाव उनके व्यक्तित्व को अत्यंत सम्मोहक बनाता था।

उनकी ही भांति उनके पुत्र निकीता का बचपन भी पशु-पक्षियों के साथ खेलते हुए बीता। बड़ा होकर वह भी पिता की ही भांति चित्रकार बना। कुछ पुस्तकें पिता-पुत्र ने मिलकर तैयार कीं। इसी तरह यह पुस्तक "प्राणिजगत की पहली सैर" भी बनी, जिसे लिखा येव्गेनी चारूशिन ने और चित्र बनाये निकीता चारूशिन ने।



राडुगा प्रकाशन
मास्को